UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

JRF का जलवा

UNIT= 5

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान सामान्य परिचय

Daily = 6 pm

Class = 90

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d purshuing

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

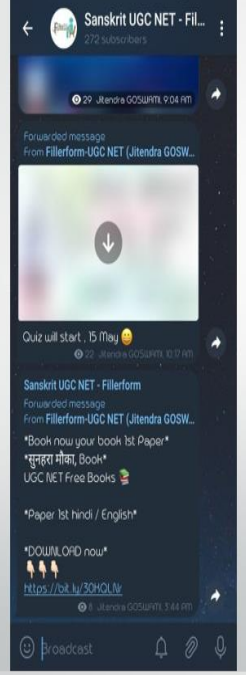
Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Quiz will start , 15 May
Sanskrit UGC NET - Fillerform
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books
Paper 1st hindi / English
DOWNLOAD now
https://bit.ly/3OHQLIv
Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members
Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books
Paper 1st hindi / English
DOWNLOAD now
https://bit.ly/3OHQLIv
Maya Jatwa
Photo
Very good
Message

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching Aptitude By Jitendra Goswami | NET
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
07:00 PM - Short video(notes)
08:00 PM- Job/PhD update
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

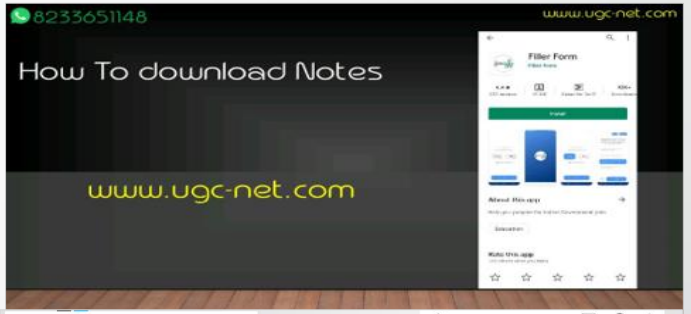
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

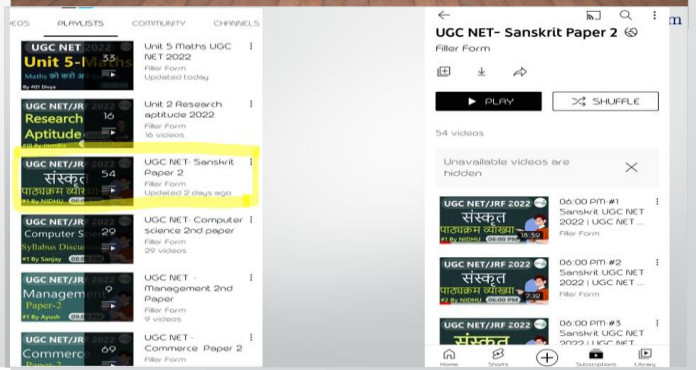
PLAYLISTS
COMMUNITY
CHANNELS
UGC NET Unit 5-I
Unit 5 Maths UGC NET 2022
Unit 2 Research aptitude 2022
UGC NET- Sanskrit Paper 2
UGC NET- Computer science 2nd paper
UGC NET - Management 2nd Paper
UGC NET - Commerce Paper 2
UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
PLAY
SHUFFLE
54 videos
Unavailable videos are hidden

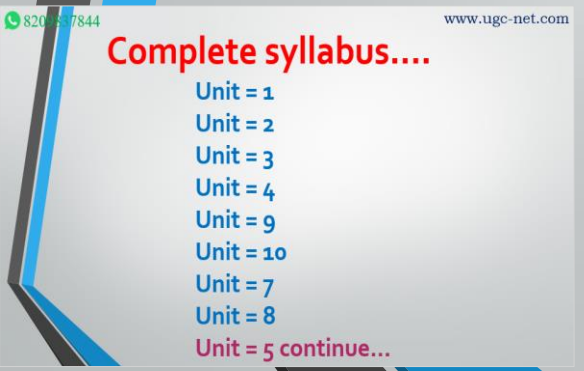
8209837844
www.ugc-net.com
Complete syllabus....
Unit = 1
Unit = 2
Unit = 3
Unit = 4
Unit = 9
Unit = 10
Unit = 7
Unit = 8
Unit = 5 continue...

8209837844
www.ugc-net.com
We want JRF
JRF का जलवा
We want JRF

UGC NET Giveaway
Free Smart Watch
MAY
22
Apply Now
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers

29 Jitendra GOSWAMI, 9:04 AM

Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...

Quiz will start , 15 May 😀
22 Jitendra GOSWAMI, 10:17 AM

Sanskrit UGC NET - Fillerform
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
8 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members

MJ

2:42 PM

Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
344 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Maya Jatwa
Photo
Very good 👍 4:59 PM

Message

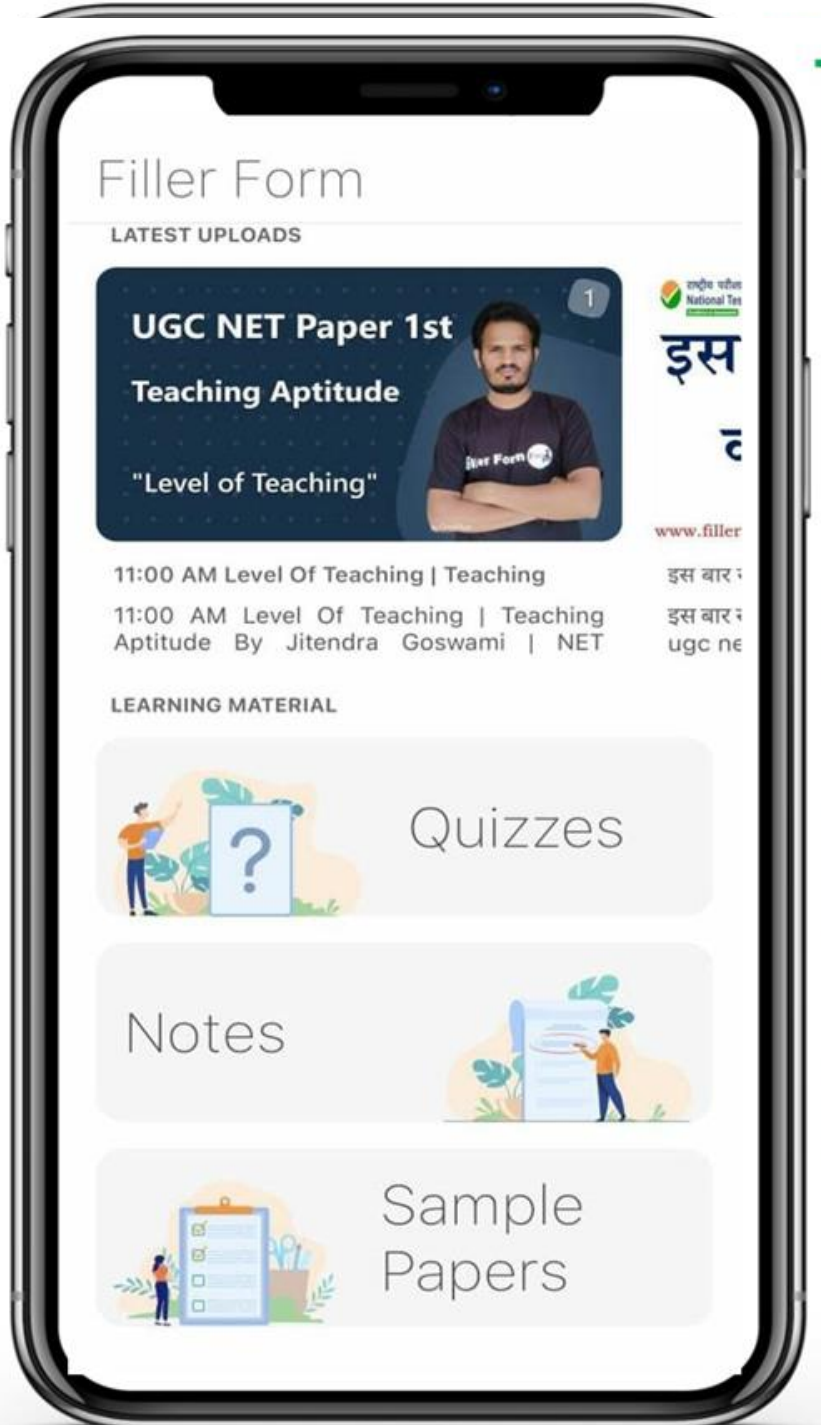

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

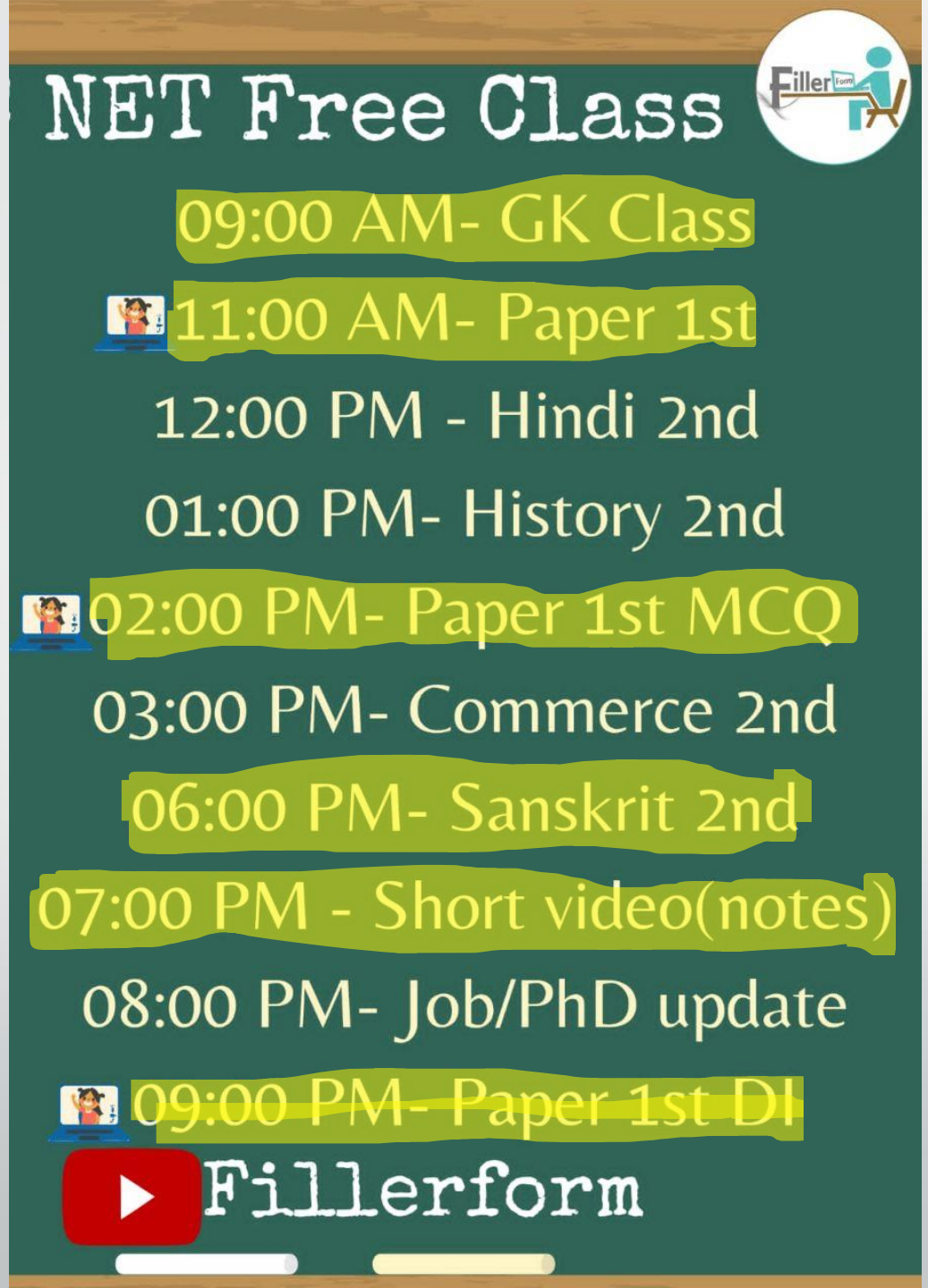

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

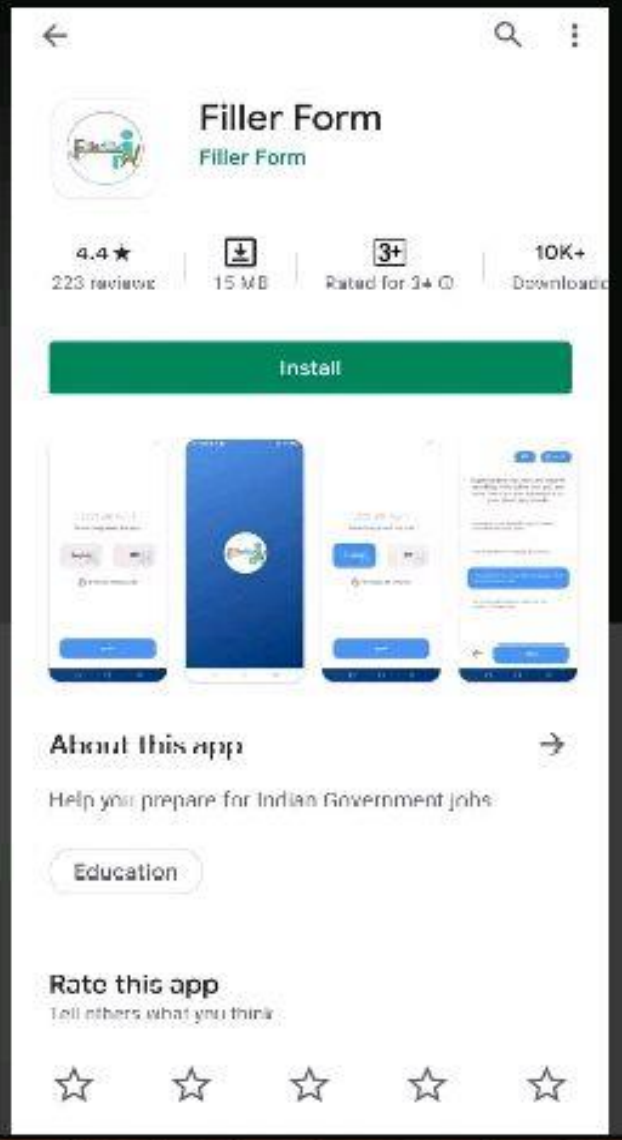

EOS PLAYLISTS COMMUNITY CHANNELS

Unit 5 Maths UGC NET 2022
Filler Form
Updated today

Unit 2 Research aptitude 2022
Filler Form
16 videos

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
Updated 2 days ago

UGC NET- Computer science 2nd paper
Filler Form
29 videos

UGC NET - Management 2nd Paper
Filler Form
9 videos

UGC NET - Commerce Paper 2
Filler Form

UGC NET- Sanskrit Paper 2

Filler Form

PLAY SHUFFLE

54 videos

Unavailable videos are hidden

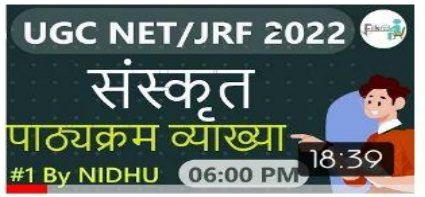

06:00 PM-#1 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

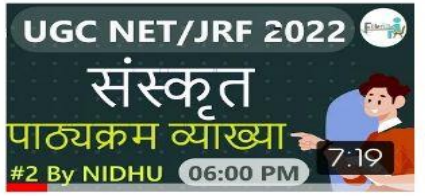

06:00 PM-#2 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

06:00 PM-#3 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET

Home Shorts Subscriptions Library

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

Free Smart Watch

Apply Now

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

We want JRF

We want JRF

8209837844

www.ugc-net.com

Complete syllabus....

Unit = 1

Unit = 2

Unit = 3

Unit = 4

Unit = 9

Unit = 10

Unit = 7

Unit = 8

Unit = 5 continue...

Today's Topic....

भारतीय आर्यभाषाएं-

8209837844

www.ugc-net.com

भारतीय आर्यभाषाएं-

(क) प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं- 2500 ई.पू. से 500 ई.पू.तक।

(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं-500ई.पू.से1000ई.पू. तक।

(ग) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं - 1000 ई.पू. से वर्तमान तक

(क) प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत ।

(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं -

1. प्राचीन प्राकृत या पालि - शिलालेखी प्राकृत।

2.मध्यकालीन प्राकृत- शौरसेनी,महाराष्ट्री,मागधी, अर्धमागधी,पैशाची।

3. परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश।

(ग) आधुनिक -इनका विकास मध्यकालीन अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है। **अपभ्रंश** - शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, ब्राचड, खस्, ।

82098

-net.com

अर्थपरिवर्तन अर्थविकास की दिशाएं एवं कारण-

संसार की सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। इस अर्थ-परिवर्तन को विकास-सिद्धान्त की दृष्टि से 'अर्थविकास' भी कहा जाता है। यह अर्थ-परिवर्तन तीन प्रकार का होता है-1. कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है, 2. कहीं पर अर्थ में संकोच होता है, 3. कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नया अर्थ आ जाता है। इन्हें ये नाम दिए गए हैं-

(1) **अर्थविस्तार** (Expansion of Meaning)

(2) **अर्थसंकोच** (Contraction of Meaning)

(3) **अर्थादेश** (Transference of Meaning)

8209 net.com

इन तीनों के जो उदाहरण मिलते हैं, उन पर विचार करने से ज्ञात होता है कि कुछ स्थानों पर अर्थ अपने मूल अर्थ से उत्कृष्ट हो गया है और कहीं पर वह अपने मूल अर्थ से निकृष्ट, अपकृष्ट या घटिया हो गया है। इस दृष्टि से भी इनको दो भागों में रखा जाता है। ये उपर्युक्त तीनों भेदों में आते हैं; परन्तु सुविधा के लिए इन पर अलग भी विचार किया जाता है। ये भेद हैं-

(क) अर्थोत्कर्ष (Elevation of Meaning)

(ख) अर्थापकर्ष (Deterioration of Meaning)

'ब्रिल' के अनुसार यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार से होता है -

1. अर्थविस्तार 2. अर्थ संकोच 3. अर्थादेश

8209837844 .ugc-net.com

1. अर्थविस्तार-

कुछ शब्द मूल रूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे , बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया । **उदाहरण** - कुशल, प्रवीण, तैल, गौशाला (गोष्ठ), महाराज, , गवेषणा ।

2. अर्थसंकोच-

अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है ।

उदाहरण - गौ, अश्व, पृथ्वी, मनुष्य, जगत, संसार, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज, जलद, तोयद, अम्बुद, वारिवाह, वारिधि, नीरधि, अम्बुधि, तोयदि, पर्वत, तटस्थ, मध्यस्थ, मन्दिर, मृग, सभ्य, श्राद्ध, वेदना, घृणा, अनुकूल, प्रतिकूल, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विशेषण, नामकरण, पारिभाषिकता, तर्पण, सर्व।

8209837844

www.ugc-net.com

3. अर्थादेश-

अर्थादेश का अर्थ है, अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया आ जाता है । उदाहरण - असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, (मूर्ख), बौद्ध-बुद्धु, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, मुग्ध्-मूर्ख, कर्पट-कपड़ा, वाटिका-बाड़ी।

4. अर्थोत्कर्ष-

मुग्ध्, साहस-साहसी, कर्पट-कपड़ा, फिरंगी, गोष्ठ-गोष्ठी, गवेषणा, सभ्य।

5. अर्थापकर्ष-

असुर, जुगुप्सा, शौच, देवानां प्रियः, घृणा, महाराज, भद्र-भद्रा, चतुर्वेदी चौबे, हरिजन- शिल्पकार, लिंग, उद्धार-उधार, मधुर, वज्रवटुक, आबदस्त कामशास्त्र, सहवास।

8209837845 ugc-net.com

वाक्य का लक्षण व भेद-

वाक्य की परिभाषा- पतंजलि ने महाभाष्य में वाक्य के 5 लक्षण दिए हैं-

1. एक क्रिया-पद वाक्य है ।
2. अव्यय, कारक और विशेषण से युक्त क्रिया-पद वाक्य है ।
3. क्रिया-विशेषण-युक्त क्रिया-पद वाक्य है।
4. विशेषण-युक्त क्रिया-पद वाक्य है।
5. क्रियापद-रहित संज्ञा-पद भी वाक्य होता है । जैसे- तर्पणम् (तर्पण करो), पिण्डीम् (ग्रास खाओ)। मीमांसकों, नैयायिकों और साहित्यशास्त्रियों ने साकांक्ष पद-समूह को 'वाक्य' माना है। आचार्य विश्वनाथ ने 'आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति से युक्त पद-समूह को वाक्य माना है। आचार्य 'भर्तृहरि' ने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों और

8209837844 www.ugc-net.com

दार्शनिकों के मतों का संग्रह 'वाक्यपदीय' में करते हुए वाक्य की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी हैं :-

(1) क्रिया-पद को वाक्य कहते हैं।

(2) क्रिया-युक्त कारकादि के समूह को वाक्य कहते है।

(3) क्रिया एवं कारकादि-समूह में रहनेवाली 'जाति' वाक्य है।

(4) क्रियादि-समूह-गत एक अखण्ड शब्द (स्फोट) वाक्य है।

(5) क्रियादि-पदों के क्रम-विशेष को वाक्य कहते हैं।

(6) क्रियादि के बुद्धिगत समन्वय को वाक्य कहते हैं।

(7) साकांक्ष प्रथम पद को वाक्य कहते हैं।

(8) साकांक्ष पृथक्-पृथक् सभी पदों को वाक्य कहते हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

वाक्यों के प्रकार-

विभिन्न दृष्टिकोण से विचार करने पर भाषा में प्रयुक्त वाक्यों के अनेक प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं। इनको संक्षेप में इस प्रकार रखा जा सकता है-

1. आकृति-मूलक भेद
2. रचना-मूलक भेद
3. अर्थ-मूलक भेद
4. क्रिया-मूलक भेद
5. शैली मूलक भेद

8209837844

.ugc-net.com

भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य परिचय-

भारोपीय भाषा परिवार विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में सर्वप्रमुख भाषा परिवार है। इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में सबसे ज़्यादा है। इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, बंगाली, फ़ारसी, ग्रीक, लेटिन, अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, पुर्तग़ाली और इतालवी इत्यादि हैं।

भारत में 4 भाषा–परिवार

भाषा-परिवार	भारत में बोलने वालों का %
भारोपीय	73%
द्रविड़	25%
आस्ट्रिक	1.3%
चीनी–तिब्बती	0.7%

8209837844

www.ugc-net.com

विस्तृत क्षेत्र-

भारत में आदिवासियों द्वारा भारोपीय भाषा परिवार की भाषाएँ हिन्दी भाषी प्रदेशों में विशेष रूप से बोली जाती हैं। हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य भारोपीय भाषाओं के क्षेत्र गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान हैं। यहाँ पर पाये जाने वाले आदिवासी भी भारोपीय परिवार की ही भाषाएँ बोलते हैं। आदिवासी भाषाओं में भारोपीय भाषा परिवार

820983784

ugc-net.com

की सबसे अधिक व्यवहृत भाषा 'भीली' है, जो मुख्य रूप से भीलों और उसके उपवर्गों द्वारा तो व्यवहार में लाई ही जाती है, पर भील क्षेत्र के गैर आदिवासी भी इसका प्रयोग करते हैं। 'भीली' बोलने वालों की संख्या सन 1961 में 24,39,611 आँकी गई थी। भील, मीणा और मिलाला जहाँ भीली भाषा का प्रयोग करते हैं, वहीं भुंइयाँ, भुमिया, कुमार, धोबा और हल्बा छत्तीसगढ़ी बोलते हैं। अगरिया, बिंझवार और कोल भी हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। चकमा बाङ्ला भाषा का प्रयोग करते हैं तथा ब्रह्मपुत्र की घाटी की कुछ जनजातियाँ असमिया भाषा का प्रयोग करते हैं। भारोपीय भाषाओं को व्यवहृत करने वाले अधिकतर आदिवासी कोल समूह के हैं। इनके बाद द्रविड़ और मंगोल जाति के आदिवासियों का क्षेत्र आता है।

8209837844

w.ugc-net.com

विशेषताएँ-

भारोपीय भाषा परिवार की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. यह विश्व के बड़े भाग में बोला जाता है।
2. अन्य परिवारों की तुलना में इसमें भाषाओं और बोलियों की संख्या बहुत अधिक है।
3. साहित्य रचना के क्षेत्र में भी इस परिवार की भाषाएँ अग्रणी हैं।
4. इस परिवार की भाषाओं तथा बोलियों का विश्लेषण विश्व में सर्वाधिक हुआ है।
5. भाषा-विज्ञान के विकास में इस परिवार के विद्वानों, जैसे- **पाणिनी, भर्तृहरि, ब्लूमफ़ील्ड, चॉम्स्की** आदि ने ही सर्वाधिक कार्य किया है।

8209837844

www.ugc-net.com

वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत में अन्तर-

संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। भारतीय उपमहाद्वीप में विचार-विनिमय हेतु उपयोग में लायी गयी ज्ञात भाषाओं में सबसे प्राचीन संस्कृत भाषा है। जिसके सामान्यतः दो रूप हैं, वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत या प्राचीन संस्कृत का उपयोग वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद), पुराण, उपनिषद में देखने को मिलता है। **पाणिनि** ऋषि से पूर्व की लगभग सभी रचना वैदिक संस्कृत में मिलती हैं। यह **भारोपीय (इंडो-यूरोपीय)** भाषा इरानियों के पवित्र ग्रन्थ **अवेस्ता** की भाषा के निकटवर्ती प्रतीत होती है। पाणिनि की रचना अष्टाध्यायी से लौकिक संस्कृत का रूप उभरकर आया। संस्कृत भाषा में व्याकरणिक सुधार के साथ सामान्य संस्कृत भाषा की शब्दावली का उपयोग किया गया है। लौकिक संस्कृत का प्राचीन उपयोग 500 ईसा पूर्व रामायण और महाभारत में मिलता है। लौकिक संस्कृत को वैदिक

8209837844

www.ugc-net.com

संस्कृत का विकसित रूप कहा जा सकता है। प्रथम शताब्दी में भारतीय-आर्य परिवार की यह भाषा पूर्वी और मध्य एशिया में अत्यंत प्रसिद्ध हो गयी थी। दोनों में धातु रूपगत अंतर हैं। वैदिक काल में एक शब्द के कई तरह के अर्थ थे। धीरे धीरे विकास के साथ पर्याप्त शब्द संस्कृत मे शामिल होते गये। वेदों में **गौ** के कई अर्थ हैं **जैसे किरणें, धरती, गाय** आदि । पहले **मृग** शब्द का प्रयोग **सिंह हाथी हिरण** सबके लिए होता था। फिर **मृग हस्तिन** शब्द हुआ हाथी के लिए। मतलब हाथ वाला या सूंढ वाला मृग। फिर केवल हस्ती रह गया।

वैदिक संस्कृत में **ऋ और ऌ** के दीर्घ रूप क्रमश: **ॠ और ॡ** समन्वित शब्द सम्मिलित थे, जो आधुनिक संस्कृत में नहीं दिखाई देते। संयुक्ताक्षरों में **ह और ळ** का संयोग तथा चन्द्र बिन्दु और स्वर का संयोग मिलता है, **उदाहरण- "समूह्ळमस्य पांसुरे, मधुमाँ अस्तु"** जो आधुनिक संस्कृत में नहीं मिलता। कतिपय आर्ष रूप, कालों की छटाएं जैसे **लुङ् लेट् उदाहरण- अवादीत् अगात्** आदि रूप भी आधुनिक संस्कृत में नही मिलते । आज की संस्कृत वैदिक संस्कृत से ही निकली है जबकि उस समय की लौकिक संस्कृत से प्राकृत आदि भाषाएं निकलीं।

8209837 gc-net.com

भाषा तथा वाक् में अन्तर-

भाषा और वाक्-

भाषा शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से अपने व्यापक अर्थ में किया जाता है। इसमें उच्चारण, ग्रहण और बोध सभी का समावेश रहता है। बोलने वाला भी भाषा बोलता है, सुनने वाला भी भाषा सुनता है और बोध भी भाषा रूप में होता है। परन्तु गम्भीरता से विचार करने पर भाषा के दो रूप प्रकट होते हैं- **(1) स्थायी एवं सूक्ष्म रूप, (2) अस्थायी एवं स्थूल रूप** । स्थायी एवं सूक्ष्म रूप को 'भाषा' (Language) और अस्थायी एवं स्थूल रूप को 'वाक्' (Speech) कहेंगे। इस 'वाक्' को भाषण भी कह सकते हैं। भाषा और वाक्' का अन्तर भाषा और भाषण' के अन्तर से भी समझा जा सकता है।

8209831 c-net.com

भाषा और वाक् में अन्तर- भाषा सूक्ष्म एवं भावात्मक वस्तु है, वाक् स्थूल और भौतिक वस्तु है। भाषा स्थायी है, वाक् अस्थायी है। जो कुछ हम बोलते और सुनते हैं, वह वाक् है। श्रवण के द्वारा जो हमें ज्ञान होता है, वह भाषा है। वागिन्द्रिय द्वारा उच्चरित और श्रवणेन्द्रिय द्वारा गृहीत भाषा का रूप 'वाक्' की कोटि में आता है। भाषा के आदान और प्रदान-बोलने और सुनने को की गणना 'वाक्' में होती है। इसके द्वारा जो बोध या ज्ञान होता है, जह भाषा का वास्तविक रूप है। भाषा कूटस्थ है, भावात्मक है, सूक्ष्म है, और अनिर्वचनीय है। 'वाक्' भाषा के प्रकाशन का माध्यम है। यह स्थूल एवं नश्वर है। इसका निर्वचन या विश्लेषण हो सकता है। इसी आधार पर ध्वनि-विज्ञान अंग की सत्ता है। वाक्यपदीय के शब्दों में भाषा को 'स्फोट' और वाक् को 'नाद' कह सकते हैं। भाषा

8209831 c-net.com

भाषा और वाक् में अन्तर- भाषा सूक्ष्म एवं भावात्मक वस्तु है, वाक् स्थूल और भौतिक वस्तु है। भाषा स्थायी है, वाक् अस्थायी है। जो कुछ हम बोलते और सुनते हैं, वह वाक् है। श्रवण के द्वारा जो हमें ज्ञान होता है, वह भाषा है। वागिन्द्रिय द्वारा उच्चरित और श्रवणेन्द्रिय द्वारा गृहीत भाषा का रूप 'वाक्' की कोटि में आता है। भाषा के आदान और प्रदान-बोलने और सुनने को की गणना 'वाक्' में होती है। इसके द्वारा जो बोध या ज्ञान होता है, जह भाषा का वास्तविक रूप है। भाषा कूटस्थ है, भावात्मक है, सूक्ष्म है, और अनिर्वचनीय है। 'वाक्' भाषा के प्रकाशन का माध्यम है। यह स्थूल एवं नश्वर है। इसका निर्वचन या विश्लेषण हो सकता है। इसी आधार पर ध्वनि-विज्ञान अंग की सत्ता है। वाक्यपदीय के शब्दों में भाषा को 'स्फोट' और वाक् को 'नाद' कह सकते हैं। भाषा

8209837844 www.ugc-net.com

साध्य है, वाक् साधन। हम शब्दों या वाक्यों को सुनकर जो कुछ सीखते हैं, वह भाषा है। भाषा को सीखकर जो हम बोलते हैं, वह वाक् है। इस प्रकार भाषा के बोधपक्ष को भाषा' कहते हैं और उच्चारण एवं श्रवण-पक्ष को वाक्। ज्ञान भाषा है और उसका प्रकाशन वाक्। भाषा अनुभूति, भाव और विचार के रूप में स्थायी है और वाक् उच्चारण के साथ नष्ट होती रहती है। एक वाक्य को बीस बार बोलने पर 'वाक्' की 20 इकाइयाँ होंगी, परन्तु भाषा की वह एक इकाई मानी जायगी। 'भाषा' ज्ञान की समष्टि है और 'वाक्' उसकी अभिव्यक्ति। वाक्य और व्याकरण 'भाषा' के अंग हैं, परन्तु उच्चारण और ग्रहण 'वाक्' के अवयव हैं।

82098
net.com

भाषा और बोली में अंतर-

भाषा-

यदि भाषा की बात की जाये तो ये एक प्रकार का साधन होता है जो आपके अंदर की भावनाओं और विचार को व्यक्त करने के लिए उपयोग किया जाता है । इसमें हम वाचिक ध्वनि का प्रयोग करते हैं । भाषा मुँह से बोले गए शब्दों और वाक्यों का समूह होता है जिनके द्वारा हम अपनी बात दूसरे को समझा पाते हैं । जब कुछ शाब्दिक ध्वनियों का प्रयोग करके कुछ वाक्यों के समूह को मिलाके जब पूरा एक पैराग्राफ बनता है उसे भाषा कहा जा सकता है ।

8209837844
www.ugc-net.com

बोली-

किसी भी प्रकार की भाषा क्यों न हो उसका जन्म बोली से ही होता है जब बोली के व्याकरण का मानकीकरण किया जाता है और उस बोली के बोलने या उसे लिखने से कोई अर्थपूर्ण वाक्य बनता है जिसे हम आराम से समझ सकते हैं और बोली जब भावों को समझा पाती है और उसे लिखने से साहित्य का रूप बनता है तो उसे भाषा कहा जाता है। कोई भी बोली हमारे लिए तब अधिक महत्व रखती है जब उसका स्थान साहित्य में, शिक्षा में या सामाजिक व्यवहार में कारगर हो कई सारी बोलियां मिल के ही एक भाषा को उत्पन्न करती हैं।

8209837 gc-net.com

भाषा और बोली में अंतर

1. शब्दों और वाक्यों के समूहों को भाषा कहते हैं, इन्हे हम बोल के या लिख के समझ या समझा सकते हैं लेकिन कुछ ऐसी मौखिक ध्वनि जिनके साथ शब्द और वाक्य प्रस्तुत होते हैं बोली कहलाती है ।
2. भाषा को हम लिखित रूप से व्यक्त कर सकते हैं लेकिन कुछ भाषा ऐसी होती हैं जिन्हे हम लिखित रूप में नहीं पाते हैं बोली कहलाती हैं जैसे – भोजपुरी ।
3. भाषा दो प्रकार की होती हैं मौखिक और लिखित, जबकि बोली को हम केवल मौखिक रूप से पाते हैं ।

8209837844

ww.ugc-net.com

4. भाषा की अपनी लिपि होती है जैसे की हिंदी की देवनागरी, अंग्रेजी की रोमन, पंजाबी की गुरुमुखी, आदि और यदि बोली की बात की जाए तो वो क्षेत्र विशेष में बोली जाती है और इसमें जो लिपि का उपयोग कर के लिखा जाता है वो उस भाषा की बोली कहलाती है ।
5. भाषा विस्तृत होती है जबकि बोली स्थानीय होती है ।
6. भाषा का प्रयोग शिक्षा, सामाजिक व्यवहार, साहित्य आदि में होता है जबकि बोली को कभी बोलने में उपयोग कर सकते हैं अर्थात बात करने में ।
7. भाषा में शुद्धता और अशुद्धता का ध्यान रखना होता है जबकि बोली को बोलने के कोई नियम नहीं होते हैं ।
8. भाषा का व्याकरण होता है जबकि बोली का नहीं।

8209837844

www.ugc-net.com

Next class....

इकाई-6

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन-

8209837844

www.ugc-net.com

Home work ....

Feedback Send me On Telegram Group...

This Group.. = SANSKRIT BY NIDHU

This link..= https://t.me/+TfoY7528c8UoMmFl

WE WANT
YOUR
FEEDBACK

LIKE
& SHARE

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

//Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

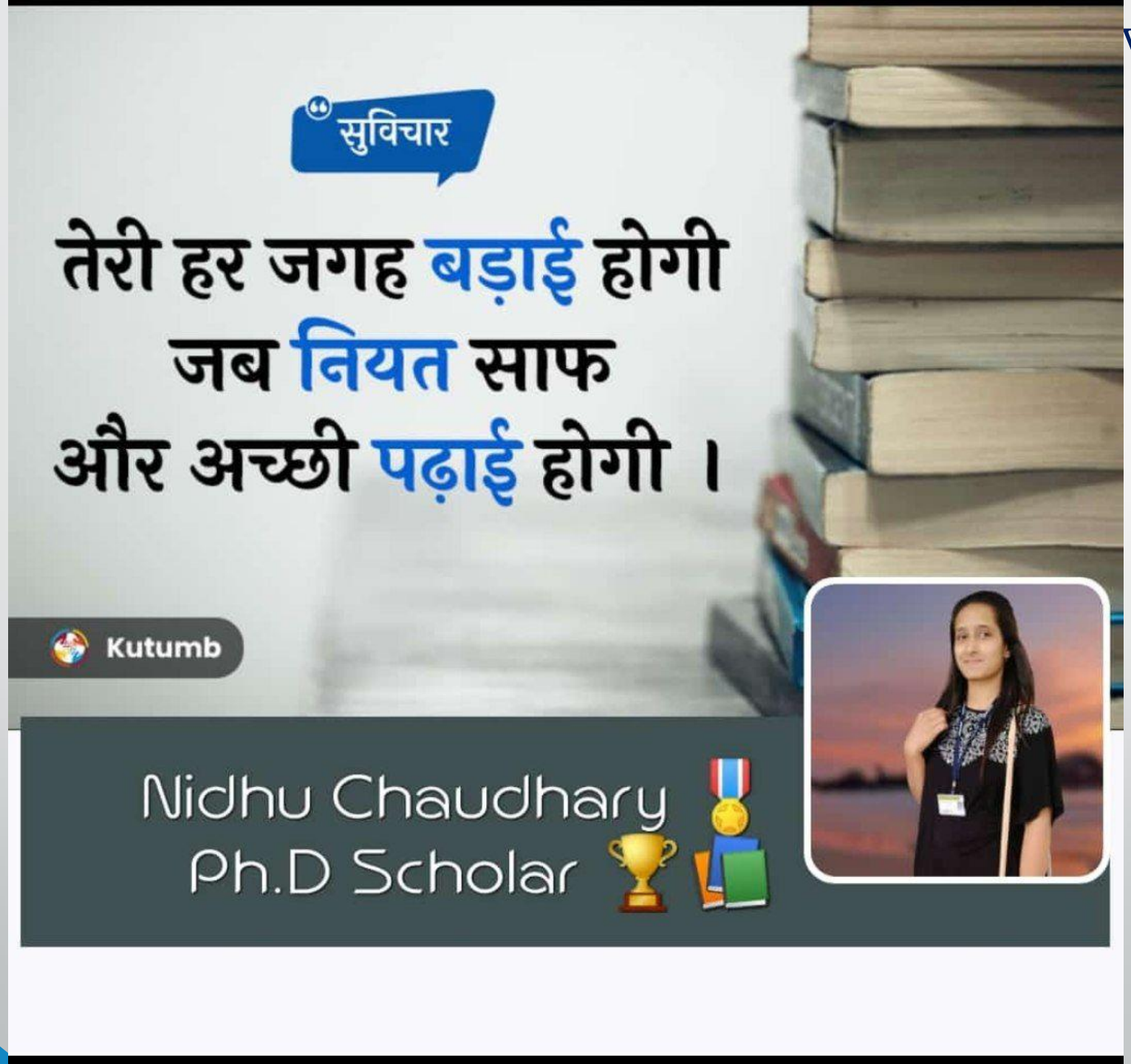

thank
you